८

वामदेवो गौतमः। अग्निः। गायत्री

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥ ४.००८.०१

वः- युष्माकम्। दूतम्। विश्ववेदसम्- सर्वज्ञानयुक्तम्। हव्यवाहम्- चरुपुरोडाशध्यानभावनादिहव्यधारकम्। अमर्त्यं- देवम्। यजिष्ठम्- अतिशयेन पूज्यमग्निम्। गिरा- वाचा। ऋञ्जसे- प्रसाधयामि ॥१॥

स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति॥ ४.००८.०२

सः- असौ। महान्- महात्मा। वसुधितिम्- चित्तवृत्तिस्तम्भधारणम्। वसु स्तम्भे। दिवः- चित्ताकाशस्य। आरोधनम्- निरोधम्। वेद- जानाति। हि- खलु। सः- असावग्निः। देवान्- द्योतनशक्तीः। आ- आभिमुख्येन। इह- अत्र। आ वक्षति- आवहति ॥२॥

स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दाति प्रियाणि चिद्वसु॥ ४.००८.०३

सः- असौ। देवः। ऋतायते- सत्यकामाय। दमे- यज्ञसदने। देवान्- देवानाम्। आनमम्- नमस्कारम्। वेद- जानाति। प्रियाणि- इष्टानि। वसु- धनानि। दाति- यच्छति ॥३॥

स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते। विद्वाँ आरोधनं दिवः॥ ४.००८.०४

सः- असौ। होता- देवाह्वाता। सः। अन्तः- देवमनुष्ययोर्मध्ये। दिव आरोधनम्- स्वर्गारोहणम्। विद्वान्- जानन्। चिकित्वान्- प्रज्ञापकः सन्। दूत्यम्- दौत्यम्। ईयते- गच्छति ॥४॥

ते स्याम ये अग्नये ददाशुर्हव्यदातिभिः। य ईं पुष्यन्त इन्धते॥ ४.००८.०५

हव्यदातिभिः- हविर्दानैः। ये। अग्नये। ददाशुः- प्रीतिं कुर्वन्ति। ये। ईम्- एतमग्निम्। पुष्यन्तः- पोषयन्तः। इन्धते- उद्दीपयन्ति। ते वयम्। स्याम- भवेम ॥५॥

ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे। ये अग्ना दधिरे दुवः॥ ४.००८.०६

ये। अग्नौ- पावके सर्वभूतहितक्रतौ। दुवः- परिचर्याम्। दधिरे- धृतवन्तः। ते। राया- सम्पदा। सुवीर्यैः। ससवांसः- सम्भजमानाः। वि- विशेषेण। शृण्विरे- प्रख्यायन्ते ॥६॥

अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः। अस्मे वाजास ईरताम्॥ ४.००८.०७

अस्मे- एतस्मै। दिवेदिवे- प्रतिदिनम्। पुरुस्पृहः- बहुभिः कामिताः। रायः- सम्पदः। सं चरन्तु- सम्यक् सरन्तु। अस्मे- एतस्मै। वाजासः- अन्नानि च। ईरताम्- प्रेरयन्तु ॥७॥

स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अति क्षिप्रेव विध्यति॥ ४.००८.०८

सः- असावग्निः। विप्रः- मेधावी। शवसा- स्वबलेन। मानुषाणां चर्षणीनाम्- मनुष्यप्रजानामन्तरायान्। क्षिप्रेव- क्षिप्रमेव। अति विध्यति- नाशयति ॥८॥